भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के संबंध में वर्ष 2022-2023 के लिए वार्षिक प्रतिवेदन तथा ऑडिट रिपोर्ट के साथ वार्षिक एकाउंट्स को लोक सभा / राज्य सभा के पटल पर प्रस्तुत किये जाने हेतु समीक्षा वक्तव्य

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद (आईसीएमआर), स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन एक स्वायत्त संगठन है। यह देश का शीर्ष और प्रमुख चिकित्सा अनुसंधान संगठन है जो बायोमेडिकल अनुसंधान की योजना, नियमन, समन्वय, कार्यान्वयन और प्रौन्नत करने का कार्य करता है। यह दुनिया के सबसे पुराने चिकित्सा अनुसंधान निकायों में से एक है। 1911 में, भारत सरकार ने देश में चिकित्सा अनुसंधान को प्रायोजित और समन्वित करने के विशिष्ट उद्देश्यों के साथ इंडियन रिसर्च फंड एसोसिएशन (आईआरएफए) की स्थापना का एक ऐतिहासिक निर्णय लिया था। आजादी के बाद, 1949 में, इसके कार्यों और गतिविधियों का विस्तार करते हुए सरकार ने आईआरएफए के स्थान पर "भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद" (आईसीएमआर) के रूप में नया नाम दिया। वर्ष 2022-23 में राष्ट्रीय जैव चिकित्सा और सार्वजनिक स्वास्थ्य अनुसंधान में आईसीएमआर का बहुत बड़ा योगदान देखा गया है। वर्ष 2022-23 के दौरान आईसीएमआर द्वारा की गई गतिविधियाँ निम्नलिखित हैं:

1. माननीय केंद्रीय स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्री ने दिनांक 25 जून, 2022 को भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद् – रोग नियंत्रण अनुसंधान केंद्र, पुडुचेरी के परिसर में " चिकित्सा कीटविज्ञान में प्रशिक्षण के लिए अंतर्राष्ट्रीय उत्कृष्टतम केंद्र (आईसीईटाइम)" की आधारशिला रखी।

2. दिनांक 7 जनवरी, 2023 को माननीय केंद्रीय स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्री द्वारा भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद् – क्षेत्रीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान केंद्र; भुवनेश्वर में केंद्र के एनेक्सी भवन का उद्घाटन किया और सार्वजनिक स्वास्थ्य विद्यालय (स्कूल ऑफ पब्लिक हेल्थ) और बीएसएल III प्रयोगशाला की आधारशिला रखी गई।

3. अनिवार्य औषधियों की राष्ट्रीय सूची (एनएलईएम), 2022 माननीय केंद्रीय स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्री द्वारा दिनांक 13 सितंबर, 2022 को जारी की गई थी।आशा की जाती है कि चिकित्सा देखभाल की बेहतर गुणवत्ता, दवाओं का बेहतर प्रबंधन और स्वास्थ्य देखभाल संसाधनों की लागत को कम करने में इसका उपयोग किया जाएगा। एनएलईएम, 2022 में 27 चिकित्सीय श्रेणियों में 384 दवाएं शामिल हैं।

4. विश्व सिकल सेल दिवस, दिनांक 19 जून, 2022 को, भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद् – राष्ट्रीय पर्यावरण स्वास्थ्य अनुसंधान ने राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन, भोपाल के सहयोग से "सिकल सेल रोग (एससीडी) के समग्र प्रबंधन" पर एक कार्यशाला का आयोजन किया। माननीय केंद्रीय स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्री, मध्य प्रदेश के माननीय राज्यपाल और मध्य प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री की उपस्थिति ने दर्शकों को गौरवान्वित किया ।

5. भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद् – राष्ट्रीय जनजाति स्वास्थ्य संस्थान, जबलपुर ने दिनांक 22-23 फरवरी, 2023 को "भारत में सिकल सेल रोग" पर दो दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया था। मध्य प्रदेश के माननीय राज्यपाल इस अवसर पर उपस्थित थे।

6. दिनांक 3 दिसंबर, 2022 को केंद्रीय स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय राज्य मंत्री ने एक पुस्तक "ओडीआई-एससीआई: द ओडिसी ऑफ द वूमेन साइंटिस्ट्स ऑफ ओडिशा" का विमोचन किया, जो ओडिशा राज्य की महान महिला वैज्ञानिकों के जीवन इतिहास का दस्तावेज प्रस्तुत करती है।

7. भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद् बायोएथिक्स यूनिट द्वारा कुल 150 से अधिक अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न (एफएक्यू) तैयार किए गए हैं। यह देश भर के विभिन्न कॉलेजों/संस्थानों में युवा शोधकर्ताओं और नवगठित आचार समितियों के लिए सूचना के स्रोत के रूप में काम करेगा। माननीय केंद्रीय स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय राज्य मंत्री द्वारा दिनांक 27 सितंबर, 2022 को एफएक्यू हार्ड कॉपी जारी की गई थी।

8. स्वास्थ्य सेवा महानिदेशालय, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय और विश्व स्वास्थ्य संगठन (भारत-कार्यालय) के सहयोग से भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद् – राष्ट्रीय कालरा और आंत्र रोग संस्थान द्वारा "भारत में बचपन कैंसर देखभाल सेवाओं का स्थितिजन्य विश्लेषण -2022" पर तैयार की गई रिपोर्ट माननीय केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण राज्य मंत्री द्वारा दिनांक 27 सितंबर, 2022 को जारी की गई थी। रिपोर्ट के निष्कर्षों में बचपन के कैंसर की नीति बनाने की आवश्यकता पर जोर दिया गया है जो समय पर निदान, उपचार, सहायक देखभाल और अच्छी तरह से परिभाषित देखभाल के मार्गों के माध्यम से अनुवर्ती कार्रवाई को सक्षम बनाएगी।

9. भारत में, एमपॉक्स का पहला घातक मामला जुलाई, 2022 में संयुक्त अरब अमीरात से केरल में आयात किया गया था और क्लैड IIb के ए.2 वंश के साथ इसका पता चला था। भारत में पाए गए एमपॉक्स मामलों के जीनोम के लक्षणों की पहचान ए.2 वंश के तीन उप-समूहों की पहचान हुई। दिल्ली में मामलों के नमूनों में एमपॉक्स डीएनए 5वें से 24वें पोस्ट-ऑन-ऑन दिनों (पीओडी) के नैदानिक नमूनों में पाया गया था। अंतरराष्ट्रीय यात्रा इतिहास के बिना एमपॉक्स के ये मामले समुदाय में अल्प निदान किए गए एमपॉक्स संक्रमण का सुझाव देते हैं।

10. स्ट्रीम चरण 2 क्लिनिकल परीक्षण, जहां भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद् –राष्ट्रीय यक्ष्मा अनुसंधान संस्थान भारत में नोडल साइट थी, ने राष्ट्रीय टीबी उपचार दिशा-निर्देशों में 9 महीने के पूर्ण मौखिक आहार को अपनाने में योगदान दिया। दो महीने के इंजेक्शन के साथ 6 महीने के अल्ट्रा-शॉर्ट आहार ने फुफ्फुसीय टीबी वाले रिफैम्पिसिन प्रतिरोधी अध्ययन ने प्रतिभागियों के बीच भी 80% से अधिक प्रभावकारिता दी।

11. राष्ट्रीय यक्ष्मा अनुसंधान संस्थान एचआईवी(HIV) वायरल लोड और एचआईवी-टीएनए पीसीआर परीक्षण के लिए राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण संगठन के लिए राष्ट्रीय संदर्भ प्रयोगशाला के रूप में कार्य करता है। आईसीएमआर ने देश की पहली 'माइकोबैक्टीरियम ट्यूबरकुलोसिस उत्परिवर्तन और दवा प्रतिरोध के साथ उनके संबंध की भारतीय सूची - 2022' जारी की।

12. भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद् - राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान संस्थान ने नियमित अंतराल पर मलेरिया माइक्रोस्कोपिस्ट के लिए प्रशिक्षण और मूल्यांकन और गुणवत्ता आश्वासन प्रदान करने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर एक मलेरिया स्लाइड बैंक की स्थापना की। राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान संस्थान ने अब तक लगभग 25000 स्लाइड तैयार की हैं।

13. भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद् - राष्ट्रीय एड्स अनुसंधान संस्थान ने एसटीआई निगरानी के लिए दिशा-निर्देशों के विकास में योगदान दिया। संस्थान ने एचआईवी और सिफलिस (ईवीटीएचएस) के ऊर्ध्वाधर संचरण के उन्मूलन के लिए दिशा-निर्देशों में भी योगदान दिया।

14. फील्ड प्रणाली (हैंड-हेल्ड एक्स-रे, आणविक निदान इत्यादि) में आधुनिक तकनीकों का उपयोग करके भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद् - राष्ट्रीय जनजाति स्वास्थ्य अनुसंधान संस्थान द्वारा यह पहला हस्तक्षेप

अध्ययन मध्य प्रदेश के एक अत्यधिक स्थानिक जिले में किया गया था, जहां सहरिया आदिवासी आबादी रहती है, इसे सफलतापूर्वक दोहराया जा सकता है। इसी तरह का मॉडल अब मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश और राजस्थान के अन्य सहरिया बहुल जिलों में भी दोहराने की योजना बनाई जा रही है।

15. वीएल-एचआईवी सह-संक्रमित मामलों के लिए नए उपचार हेतु दिशा-निर्देशों (एमबिसोम और मिल्टेफोसिन की संयोजन चिकित्सा) को डब्ल्यूएचओ द्वारा अनुमोदित किया गया था और एनसीवीबीडीसी, भारत सरकार के माध्यम से कार्यक्रम में लागू किया गया था।

16. आईसीएमआर- राजेंद्र स्मारक आयुर्विज्ञान अनुसंधान संस्थान को लीशमैनियासिस के लिए डब्ल्यूएचओ के सहयोग केंद्र के रूप में नामित किया गया है। विभिन्न सेवा घटकों के भाग के रूप में आईसीटीसी, एआरटी प्लस, ओएसटी, एमडीआर/एक्सडीआर डायग्नोस्टिक सुविधा, वीआरडीएल (मेडिकल कॉलेज स्तर), आईसीएमआर-आरएमआरआईएमएस, पटना बिहार के विभिन्न जिलों के लिए हेपेटाइटिस बी और सी के लिए वायरल लोड परीक्षण और उपचार के लिए नामित केंद्र है।

17. भारत में सर्पदंश की रोकथाम और नियंत्रण पर राष्ट्रीय कार्यक्रम के लिए भविष्य का रोड मैप आईसीएमआर-राष्ट्रीय प्रजनन एवं शिशु स्वास्थ्य अनुसंधान संस्थान द्वारा नीति आयोग को प्रदान किया गया था। आईसीएमआर-एनआईएन ने नाश्ते खाद्य पदार्थ, दोपहर के भोजन और रात के भोजन, फास्ट फूड, बेकरी फूड, चाट फूड, जंक फूड आदि जैसे 150 से अधिक खाद्य पदार्थों के ग्लाइसेमिक इंडेक्स और ग्लाइसेमिक लोड का अनुमान लगाया।

18. पॉलीसिस्टिक ओवेरियन सिंड्रोम (PCOS) पर आईसीएमआर बहु-केंद्रित टास्क फोर्स अध्ययन भारत में पीसीओएस और क्षेत्रीय फेनोटाइपिक भिन्नता की व्यापकता पर डेटा प्रदान करने वाले सबसे बड़े अध्ययनों में से एक है। यह अध्ययन पीसीओएस पर नैदानिक प्रबंधन और नीति के लिए प्रासंगिक बहुमूल्य जानकारी प्रदान करता है। एक व्यवस्थित समीक्षा और मेटा-विश्लेषण से पता चला है कि सुपारी का उपयोग (तंबाकू के बिना) बंद करने से मौखिक कैंसर का जोखिम 28.9% और ग्रसनी कैंसर का 48% जोखिम उलट गया। धुंआ रहित तम्बाकू के साथ सुपारी का सेवन करने वालों के लिए, 10 साल की समाप्ति के बाद पूर्व उपयोगकर्ताओं में मौखिक कैंसर का खतरा कम हो गया था। ये परिणाम कैंसर नियंत्रण प्रयासों में सुपारी समाप्ति हस्तक्षेप को शामिल करने की नीति के लिए साक्ष्य प्रदान करते हैं।

19. आईसीएमआर- राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान सांख्यिकी संस्थान HIV सेंटिनल सर्विलांस (एचएसएस) डेटा के प्रबंधन और विश्लेषण के लिए और राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण संगठन (एनएसीओ), स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय (एमओएचएफडब्ल्यू), भारत सरकार के सहयोग से भारत, राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों के लिए एचआईवी के बोझ का अनुमान प्रदान करने के लिए नोडल संस्थान है। आईसीएमआर-एनआईआईआरआरसीएच ने एंडोमेट्रियोसिस का राष्ट्रीय नैदानिक डेटाबेस और बायोरिपोजिटरी स्थापित किया है।

20. आईसीएमआर ने तिरुवनंतपुरम में प्रथम स्वास्थ्य कार्य समूह की बैठक के दौरान आयोजित जी20 एक्सपो में भाग लिया। महामारी संबंधी तैयारियों और ट्रांसलेशनल अनुसंधान के क्षेत्र में परिषद की उपलब्धियों को प्रदर्शित करने के लिए स्टॉल की परिकल्पना की गई थी। 'प्रकोप की जांच और महामारी की तैयारी' और 'रोग प्रबंधन और उन्मूलन के लिए कार्रवाई में ट्रांसलेशनल अनुसंधान ' पर दो फिल्में भी बनाई गईं।

103

21. स्वास्थ्य संचार पर परिषद का पहला सम्मेलन "संपर्क(कनेक्ट) और सहयोग 2022" दिनांक 15 जुलाई, 2022 को आयोजित किया गया था। सार्वजनिक स्वास्थ्य, संचार और स्वास्थ्य पत्रकारिता में विशेषज्ञों और अग्रणी आवाज़ों को कई मुद्दों पर सीखने का आदान-प्रदान करने के लिए एक साथ लाया गया था।

22. नए भारत की भावना का जश्न मनाने वाली 75 कहानियों का एक विशेष संग्रह, 'चेंजिंग द नेशन्स हेल्थ लैंडस्केप' नामक शीर्षक से प्रकाशित किया गया था। आईसीएमआर ने एक रिपोर्ट 'कोविड-19 के प्रति आईसीएमआर की प्रतिक्रिया (आईसीएमआर रिस्पॉन्स टू सीओवीआईडी-19)' तैयार की है, जो सीओवीआईडी-19 के खिलाफ भारत की लड़ाई को मजबूत करने के लिए आईसीएमआर और उसके संस्थानों द्वारा किए गए विभिन्न हस्तक्षेपों का दस्तावेज प्रस्तुत करती है। आईसीएमआर के तत्वावधान में आईसीएमआर बायोएथिक्स यूनिट ने 'भारतीय संदर्भ में बायोमेडिकल एथिक्स परिप्रेक्ष्य' पर एक संदर्भ पुस्तक प्रकाशित की है।

23. आईसीएमआर ने लगभग 38 नई प्रौद्योगिकियां विकसित कीं है, 9 दिशा-निर्देश/नीतियां डिजाइन कीं, 32 रिपोर्ट/डेटाबेस/मैनुअल प्रकाशित किए और 19 अकादमिक मेडिकल/पैरामेडिकल पाठ्यक्रम शुरू किए। कुल 2425 एडहॉक प्रस्ताव, 450 टास्क फोर्स प्रस्ताव और 36 सीएआर प्रस्ताव संसाधित किए गए। कुल 42 भारतीय पेटेंट आवेदन, 4 डिज़ाइन आवेदन, 3 कॉपीराइट आवेदन और 6 विदेशी पेटेंट आवेदन दायर किए गए थे। 2 भारतीय पेटेंट और 4 विदेशी पेटेंट प्रदान किए गए। आईसीएमआर संगठन के 27 संस्थानों द्वारा कई इंट्राम्यूरल अनुसंधान कार्यक्रमों के माध्यम से सहकर्मी समीक्षा पत्रिकाओं में प्रकाशित शोध पत्रों की कुल संख्या 1018 है।

24. आईजेएमआर के कुल 10 अंक (4 विशेष अंकों) सहित प्रकाशित किए गए, विशेष अंक 'क्षय रोग, 'एचआईवी एवं क्षय-संक्रमण, 'भारत और कोविड-19 भाग VI', 'आदिवासी स्वास्थ्य' पर थे। 25 वरिष्ठ और 27 युवा भारतीय वैज्ञानिकों को आईसीएमआर-डीएचआर अंतर्राष्ट्रीय फैलोशिप प्रदान की गई। स्वास्थ्य मंत्रालय की स्क्रीनिंग कमेटी की छह बैठकें हुईं, जिनमें 201 परियोजनाओं पर विचार किया गया, जिनमें से 149 परियोजनाओं को अंतरराष्ट्रीय सहयोग के लिए मंजूरी दी गई। 3 सहमति ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए गए यथा: आईसीएमआर और इंसर्म, फ्रांस के बीच सहमति ज्ञापन, आईसीएमआर और सार्वजनिक स्वास्थ्य मंत्रालय, थाईलैंड के चिकित्सा सेवा विभाग के बीच सहमति ज्ञापन और वैक्सीन अनुसंधान, विकास और नवोन्मेष पर सहयोग के लिए और महामारी की तत्परता के नवाचार गठबंधन (सीईपीआई), आईसीएमआर और नॉर्वे के बीच एलओआई ।

अधिप्रमाणित

(प्रो. एस. पी. सिंह बघेल)
स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण राज्य मंत्री

प्रो. एस. पी. सिंह बघेल
PROF. S. P. SINGH BAGHEL
स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण राज्य मंत्री
Minister of State for Health & Family Welfare
भारत सरकार, नई दिल्ली
Govt. of India, New Delhi